सन्थाली लोककथा

एक लड़का, उसका छाता और उसके जूते

किसी गाँव में एक लड़का था। एक बार वह अपनी पत्नी को लिवाने गया। उसने छाता लिया, जूते पहने और रवाना हो गया। रास्ते में उसे कुछ और लोग मिले। वे भी उस के साथ चल रहे थे।

चलते-चलते उन्हें नदी मिली। नदी में थोड़ा पानी था। जूते पहने-पहने वह नदी पार कर गया। उस पार वह और उसके सहयात्री एक पेड़ के नीचे कुछ देर आराम करने बैठे। तब उसने अपना छाता तानकर सिर के ऊपर कर लिया, जबकि रास्ते में वह छाते को समेटे हुए चल रहा था। इसी तरह उसने नदी के इस पार और उस पार भी अपने जूते खोलकर हाथ में ले लिए थे। उसको ऐसा करते देखकर उसके सहयात्रियों को बड़ा कौतुहल हुआ। उन लोगों ने उससे पूछा, "सूखे रास्ते में तो तुम जूते हाथ में उठाए चलते हो, लेकिन नदी तुमने जूते पहने-पहने ही पार की। इसी तरह खुले रास्ते में तो छाते को मोड़े रखते हो, लेकिन पेड़ की छाया में उसे खोलकर सिर के ऊपर कर लिया करते हो। ऐसा क्यों?"

लड़के ने जवाब दिया, "खुले रास्ते में तो हमें सब कुछ साफ-साफ दिखता रहता है कि कहाँ क्या है, इसलिए कहीं कोई काँट-कूस, कँकड़-पत्थर या मैला-कुचैला रहता है तो मैं उससे बचता हुआ निकल जाता हूँ, परन्तु नदी-नाले के अन्दर कहीं कोई ऐसी चीज़ हो जो पाँवों में चुभ जाए तो मुश्किल हो जाए। इसीलिए नदी-नाला पार करते समय मैं जूते पहने हुए ही पानी में चला जाता हूँ। इसी तरह खुले रास्ते में छाते की कोई ज़रूरत मैं नहीं समझता हूँ लेकिन किसी पेड़ तले बैठने पर कोई पखेरू या कोई अन्य जन्तु ऊपर से मुझ पर बीट न कर दे, इसीलिए से वहाँ मैं छाता लगाकर बैठता हूँ।"